हिचकी से रोगों की पहचान करते हैं छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक

*** 150 घरेलू नुस्खोंका परंपरागत उपयोग**

*** 30 तरह की वनौषधियाँ उपयोगी**

नवगठित राज्य छत्तीसगढ़ में वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण मे जुटे वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि राज्य मे हिचकी को कोई अहमियत नही दी जाती है और 150 प्रकार की घरेलू औषधीयों का सहायता से इसकी चिकित्सा कर ली जाती है। घरेलू औषधीयों के नाकाम होने पर पारंपरिक चिकित्सकों की सलाह ली जाती है। सर्वेक्षणों से अब तक 30 प्रकार की ऐसी वनौषधियों की पहचान की गई जिनका उपयोग पारंपरिक चिकित्सा मे हो रहा है।

राज्य के विभिन्न भागों मे किये जा रहे इथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि भले ही सभी प्रकार की हिचकी एक जैसी लगे पर राज्य के पारंपरिक चिकित्सक हिचकी के आधार पर कई तरह के रोगों का पता लगाते है। छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों के पारंपरिक चिकित्सक बरगद, पीपल और गूलर की लकड़ी की राख को विभिन्न अनुपातों मे मिलाकर हिचकी की चिकित्सा करते है। यह मिश्रण आंतरिक रुप से दिया जाता है। पीपल की लाख का भी प्रयोग इन चिकित्सकों के बीच लोकप्रिय है। उत्तरी छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक मुनगा नामक औषधीय वृक्ष के विभिन्न पौध भागों से तैयार काढ़े का प्रयोग करते हैं। जशपुर क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक केले की जंगली प्रजाति जिसे कि बोलचाल की भाषा मे बन केला कहा जाता है, की पत्तियों का प्रयोग करते है। पत्तियों की राख रोगी को दी जाती है। उन्नत किस्म के केले की पत्तियों का प्रयोग नही किया जाता है। दक्षिण छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक कैथा नामक वनौषधि के फलों को उपयोगी मानते है। फलों का रस गूदे सहित रोगियों को दिया जाता है। पारंपरिक चिकित्सक इसके लंबे समय तक प्रयोग के पक्षधर है। कैथा के विकल्प के रुप मे बेल के फल का प्रयोग भी प्रचलन मे है।

हिचकी को किसी की याद से जोड़कर देखने वाले राज्य के निवासी अब घरेलू औषधियों का भूलते जा रहे है। 150 मे से केवल 10 प्रकार के घरेलू नुस्खे ही अब सामान्यतौर पर प्रचलन मे है। वरिष्ठ निवासी बताते है कि पहले इन नुस्खों की संख्या हजारो मे होती थी। पंकज अवधिया ने बहुत से नुस्खों का दस्तावेजीकरण का लिया है और वरिष्ठ निवासियों की सहायता से आधे - अधूरे ही सही पर उपलब्ध नुस्खों के दस्तावेजीकरण के प्रयास मे जुटे हुए है। उनका मानना है कि इस तरह के प्रयास राष्ट्रीय स्तर पर आवश्यक है ताकि पारंपरिक ज्ञान को विलुप्त होने से बचाया जा सके।